Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जैन दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : सिद्धांतों और प्रभावों का विश्लेषण

डॉ. रेखा चौर्डिया*

* महाराजा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – जैन दर्शन और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के बीच गहरा संबंध हैं। जैन दर्शन की अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद जैसी अवधारणाएं NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ संगत हैं। यह शोध पत्र इन दोनों के बीच संबंधों की खोज करता है, विशेष रूप से नैतिक शिक्षा, समग्र विकास और स्थिरता के संदर्भ में।

जैन दर्शन का परिचय – जैन दर्शन, भारत की सबसे प्राचीन दार्शनिक परंपराओं में से एक है, जिसका मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति है। इसका आधार अहिंसा (अहिंसात्मक जीवन), अपरिग्रह (संपत्ति और इच्छाओं से मुक्त होना), सत्य (सच बोलना), अस्तेय (चोरी न करना), और ब्रह्मचर्य (संयमित जीवन) जैसे सिद्धांतों पर है। जैन दर्शन मुख्य रूप से महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित किया गया, जो 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे। हालांकि, जैन दर्शन की जड़ें इससे पहले के तीर्थंकरों, विशेष रूप से 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ, की शिक्षाओं में भी निहित हैं।

जैन दर्शन आत्मा और कर्म के सिद्धांत पर आधारित है। इसके अनुसार, प्रत्येक जीव की आत्मा शुद्ध होती है, लेकिन कर्मों के बंधन के कारण आत्मा अशुद्ध हो जाती है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए आत्मा को इन कर्म बंधनों से मुक्त करना आवश्यक है। कर्म, अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते हैं, और यह आत्मा के पुनर्जन्म के चक्र को प्रभावित करते हैं। मोक्ष के लिए आत्मा को सभी कर्मों से मुक्त करना ही अंतिम उद्देश्य है, जिसे कठोर तपस्या, संयम और नैतिक जीवन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

जैन दर्शन में 'अनेकांतवाद' एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो इस विचार पर आधारित है कि सत्य बहुआयामी होता है और उसे केवल एक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। यह दर्शन यह मानता है कि किसी भी वस्तु या घटना को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, और सभी दृष्टिकोण आंशिक रूप से सही हो सकते हैं। इसी प्रकार,'स्यादवाद' जैन दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो कहता है कि किसी भी कथन या विचार को सापेक्षता के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए।

जैन दर्शन में 'अहिंसा' का विशेष महत्व है। यह केवल शारीरिक हिंसा से दूर रहने का उपदेश नहीं देता, बल्कि मानसिक और वाचिक हिंसा से भी दूरी बनाए रखने पर जोर देता है। यह दर्शन इस बात पर बल देता है कि सभी जीवात्माएँ समान होती हैं, और किसी भी जीव को कष्ट पहुँचाना पाप माना जाता है। इस प्रकार, जैन साधु-साध्वी और अनुयायी अपने दैनिक जीवन में अतिसंयम और अहिंसा का पालन करते हैं।

जैन दर्शन मानव जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आत्मा की मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति है, जो कि सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांतों के पालन से संभव है। जैन दर्शन जीवन को एक गहन नैतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से देखने का मार्ग प्रस्तुत करता है, जो आज के युग में भी अत्यधिक प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

जैन धर्म की विस्तृत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – जैन धर्म की जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ी हैं। इसके इतिहास का आरंभ 24 तीर्थंकरों से होता है, जिनमें से पहले ऋषभदेव थे। ऋषभदेव को जैन परंपरा में मानव समाज को कृषि, व्यापार और सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान देने वाला माना जाता है। इसके बाद, अन्य तीर्थंकरों ने जैन धर्म के विभिन्न सिद्धांतों और शिक्षाओं को आगे बढ़ाया। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ (877-777 ईसा पूर्व) ने जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों जैसे अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह को प्रतिपादित किया।

महावीर स्वामी, जो 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे, ने जैन धर्म को एक संगठित रूप में प्रस्तुत किया। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व बिहार के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। महावीर स्वामी ने संसार की माया और कर्म बंधन से मुक्त होने के लिए कठोर तपस्या का पालन किया और 30 वर्षों तक साधना करने के बाद उन्हें केवलज्ञान (मोक्ष) की प्राप्ति हुई। उन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य पर आधारित जीवन जीने का उपदेश दिया, जो जैन धर्म का आधार बना। उनकी शिक्षाओं को आगम ग्रंथों में संकलित किया गया, जो आज भी जैन धर्म के अनुयायियों के लिए प्रमुख धार्मिक ग्रंथ हैं।

जैन धर्म का प्रभाव विशेष रूप से मौर्य और गुप्त काल में बढ़ा। सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में जैन धर्म अपनाया और श्रवणबेलगोला में जैन मुनि भद्रबाहु के निर्देशन में संयमित जीवन जिया। जैन धर्म का यह प्रभाव केवल धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी गहरा प्रभाव छोड़ा। जैन मंदिर, मूर्तिकला और साहित्य भारतीय कला और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गए।

जैन धर्म के अनुयायी व्यापार और शिक्षा में भी प्रमुख रहे। गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में जैन समुदाय ने व्यापारिक और

शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। उनके नैतिक मूल्यों और शुद्ध आचरण ने समाज के अन्य वर्गों पर गहरा प्रभाव डाला।

जैन धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारतीय समाज के विकास और नैतिकता के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण रही है। अहिंसा, अपरिग्रह और नैतिकता पर आधारित इस धर्म ने न केवल धार्मिक क्षेत्र में, बल्कि समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

जैन दर्शन के मुख्य सिद्धांत

अहिंसा (अहिंसा) – अहिंसा जैन दर्शन का आधारभूत सिद्धांत है। यह शारीरिक हानि से परे विचार और वाणी में भी अहिंसा को शामिल करता है। यह सिद्धांत न केवल व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करता है, बल्कि समाज में शांति और सद्भाव को भी बढ़ावा देता है। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए, हर जीवित प्राणी के प्रति करुणा और दया भाव अनिवार्य है। यह सिद्धांत NEP 2020 में नैतिक और नैतिक शिक्षा पर जोर के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

अनेकांतवाद (बहुसिद्धांतवाद) अनेकांतवाद सत्य और वास्तविकता को जटिल मानता है और यह कि इसे एकल दृष्टिकोण से पूरी तरह समझा नहीं जा सकता। यह सिद्धांत बौद्धिक विनम्रता और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है। जैन धर्म के अनुसार, प्रत्येक दृष्टिकोण सत्य का एक पहलू हो सकता है, लेकिन संपूर्ण सत्य नहीं। यह सिद्धांत NEP 2020 में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मेल खाता है।

अपरिग्रह (गैर-अधिग्रहण) – अपरिग्रह भौतिक संपत्तियों और इच्छाओं से अलगाव का समर्थन करता है। यह सिद्धांत जैन मठवासी जीवन का अभिन्न अंग है और स्थायी जीवन और पर्यावरणीय नैतिकता के लिए महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत NEP2020 में टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल शिक्षा पर जोर देने के साथ जुड़ा हुआ है।

तपस्या – जैन तपस्वी कठोर अनुशासन और आत्म-संयम का अभ्यास करते हैं। इसमें उपवास, ध्यान और अन्य प्रकार की आत्म-नियंत्रण की प्रथाएं शामिल हैं ताकि आध्यात्मिक शुद्धि प्राप्त की जा सके। यह सिद्धांत छात्रों में अनुशासन और आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देने के NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ मेल खाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और जैन दर्शन

नैतिक और नैतिक शिक्षा – NEP 2020 नैतिकता, नैतिकता और अहिंसा पर जोर देती है, जो जैन दर्शन के सिद्धांतों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। नीति का उद्देश्य छात्रों को नैतिक और नैतिक रूप से सशक्त बनाना है ताकि वे समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बन सकें। जैन धर्म के अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत छात्रों को नैतिक शिक्षा के महत्व को समझने और अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

समग्र विकास – नीति का उद्देश्य छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक कल्याण शामिल है। जैन दर्शन का समग्र दृष्टिकोण इस उद्देश्य के साथ अच्छी तरह मेल खाता है। जैन धर्म के सिद्धांत छात्रों को आत्म-संयम, ध्यान और आंतरिक शांति की ओर प्रेरित करते हैं, जो उनके समग्र विकास में सहायक हो सकते हैं।

पर्यावरणीय स्थिरता – NEP 2020 पर्यावरणीय शिक्षा और स्थिरता पर जोर देती है। जैन धर्म के अपरिग्रह और अहिंसा के सिद्धांत पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं। जैन धर्म का मानना है कि सभी जीवित प्राणी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और प्रकृति का सम्मान करना आवश्यक है। यह सिद्धांत छात्रों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील बनाने में मदद कर सकता है।

बहु-विषयक और समग्र शिक्षा – नीति में बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया है। अनेकांतवाद के सिद्धांत के अनुसार, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और स्वीकार करने की क्षमता छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण है। जैन दर्शन के अनेकांतवाद का सिद्धांत छात्रों को विभिन्न विषयों और दृष्टिकोणों को एक साथ समझने और उनका सम्मान करने की शिक्षा देता है।

जैन दर्शन और NEP 2020 के उद्देश्य – जैन दर्शन और NEP 2020 के उद्देश्यों के बीच कई समानताएं हैं। दोनों नैतिकता, समग्र विकास और स्थिरता पर जोर देते हैं। जैन दर्शन के सिद्धांत NEP 2020 के उद्देश्यों को पूरक करते हैं और एक नैतिक, अनुशासित और समग्र रूप से विकसित समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद के सिद्धांत छात्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्य प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष – जैन दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच गहरा संबध है। दोनों नैतिकता, समग्र विकास और स्थिरता पर जोर देते हैं। जैन दर्शन के सिद्धांत NEP 2020 के उद्देश्यों को पूरक करते हैं और एक नैतिक, अनुशासित और समग्र रूप से विकसित समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। यह शोध पत्र जैन दर्शन और NEP 2020 के बीच संबंधों की खोज करता है, विशेष रूप से नैतिक शिक्षा, समग्र विकास और स्थिरता के विशेष संदर्भ में।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डुंडास, पॉल, द जैन, 2दक संस्करण, रूटलेज, 2002.
2. जैन, एस. ए. रियलिटी: द जैना व्यू ऑफ रियलिटी, वीर सासन संघ, 1992.
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. https// www.education.gov.in
4. भार्गव, दयानंद. जैन एथिक्स. मोतीलाल बनारसीदास, 1968.
5. सांगवी, वीरचंद आर, अनेकांतवाद और स्यादवाद: तुलनात्मक अध्ययन. जैन सांस्कृतिक अनुसंधान सोसाइटी, 1971.
6. जैन, चम्पत राय, द प्रैक्टिकल पाथ, द सेंट्रल जैना पब्लिशिंग हाउस, 1926.
7. चौपल, क्रिस्टोफर की, जैनिज्म एंड इकोलॉजी: नॉनवायलेंस इन द वेब ऑफ लाइफ, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002.
8. बालकृष्ण, आचार्य, जैनिज्म: द इटरनल धर्म, दिव्य प्रकाशन, 2010.
9. तत्त्वार्थ सूत्र, उमास्वाति. जो है, अनुवाद: नथमल तातिया, हार्पर कॉलिन्स, 1994.
10. पाठक, आर. 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ जैन मूल्यों का समावेश', भारतीय दर्शन और शिक्षा जर्नल, वॉल्यूम 25, 2021.

****